वी.सी.डी. नं.642, चंडीगढ़ कृषि फार्म,

व्याख्या ता.-01.04.07

आत्मा-परमात्मा का रहस्य

ओमशांति! एक छोटा-सा रात्रि क्लास है 4 अगस्त 1967 का। तुम बच्चे लड़ाई के मैदान में हो। काहे से लड़ाई है? माया रावण से लड़ाई है, राम सम्प्रदाय की रावण सम्प्रदाय से लड़ाई है। लड़ाई किसके साथ है? माया से, मायावी प्रवृत्तियों से और माया के होलसोल-पूरे परिवार से। माया रावण कहा जाता है ना! रावण को कितने सिर होते हैं? 10 शीश होते हैं। राम को एक शीश दिखाते हैं और रावण को 10 शीश दिखाते हैं। कोई कारण होगा! क्या कारण कि राम को एक शीश और रावण को 10 शीश दिखाते हैं? राम की एक मत है। मत माना बुद्धि। शीश में ही बुद्धि होती है और रावण के 10 शीश अर्थात् 10 प्रकार की बुद्धि। एक, एक बात कहेगा; दूसरा, दूसरी बात कहेगा; तीसरा, तीसरी बात कहेगा; 10 और 20 प्रकार की बातें आती रहेंगी। सत्य एक होता है या अनेक होते हैं? सत्य तो एक ही होता है। अंग्रेज़ लोग भी कहते हैं- गॉड इज़ ट्रुथ। जो सत्य एक होता है वो ही भगवान है। सिक्ख लोग कहते हैं- है सी भी सत्, हो सी भी सत् माना जैसे गीता में बोला है- सत्य का कभी विनाश नहीं होता 'नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।' (2/16) "आज भी सत्य है, भविष्य में भी सत्य रहेगा और पास्ट में भी सत्य ही था।" फिर झूठ खण्ड कहाँ से आ गया? ये झूठ की कलह-क्लेश युगी दुनियाँ कहाँ से आ गई? है तो झूठ की दुनियाँ, पहले नहीं थी। पहले सतयुग में सत् ही था।

दुनियाँ की हर चीज़ सतोप्रधान, सतो सामान्य, रजो और तमो होती है। तामसी हो जाती है तो दुःखदायी हो जाती है और सात्विक सतोप्रधान होती है तो सुखदायी होती है। चाहे मनुष्य हों, चाहे दुकान हो, चाहे मकान हो, पहले सतोप्रधान सुखदायी और बाद में तमोप्रधान दुःखदायी। ये दुनियाँ भी सतयुग में 100 परसेण्ट सत् थी और जब ये दुनियाँ तमोप्रधान बनती है तो 100 परसेण्ट दुःखदायी होती है; परन्तु 100 परसेण्ट दुःखदायी दुनियाँ में सत् नष्ट नहीं होता, प्रायःलोप होता है। जैसे सनातन धर्म के लिए कहते हैं- प्रायःलोप होता है। और-2 धर्मों के लिए कहते हैं- प्रायःलोप नहीं है। क्रिश्चियन्स दुनियाँ की कितनी बड़ी आबादी में फैले हुए हैं। तो प्रायःलोप कहेंगे? (नहीं कहेंगे) मुसलमान दुनियाँ के सारे ही खण्डों में छा गए थे, तो प्रायःलोप थोड़े ही कहेंगे! देवी-देवता सनातन धर्म के लिए प्रायःलोप कहा जाता है। देवतुल्य आत्माएँ देखने को नहीं मिलती हैं, जिनका काम ही होता है नाम के आधार पर देना, दूसरों को सुख देते हैं, दुःख नहीं देते। ये दुःखदायी दुनियाँ जो आज संसार में देखने में आ रही है, ये रावण की बनाई हुई 10 सिरों वाली दुनियाँ है, 10 मतों से बनाई हुई दुनियाँ है। वो 10 मत कौन-से हैं? कोई तो 10 मत होंगे! उन 10 मतों की शुरुआत करने वाले कोई तो होंगे!

हिन्दू धर्म में कहते हैं,शास्त्रों में लिखा है कि भगवान के दस अवतार हुए। दशावतार प्रसिद्ध हैं। उनमें दो अवतार मनुष्यों के दिखाए हैं, मनुष्य के वेश में- राम का अवतार और कृष्ण का अवतार और बाकी सब (हिंसक) जानवरों के अवतार दिखाय दिए हैं- कच्छ-अवतार, मच्छ-अवतार, घोड़े का अवतार, नरसिह अवतार वगैरह-2। तो ये जो दस अवतार दिखाए हुए हैं, इनके फॉलोअर्स भी रहे होंगे। हिन्दुओं में तो मान्यता है कि मनुष्य 84 लाख

योनियों में रमण करता है। अब भगवान क्या अनेक प्रकार की योनियों में शरीर धारण करके आता होगा या मनुष्य रूप में आता होगा? मनुष्य में मन होता है, बुद्धि होती है, मन-बुद्धि प्रधान होता है। भगवान आता है तो ज्ञान सुनाता है, ज्ञान का सागर कहा जाता है। क्या जानवरों के रूप में आकर ज्ञान सुनाता होगा? नहीं। भगवान तो मनुष्य वेश में ही आता है, मनुष्यों को ही सुनाता है। मनुष्य उन्हें कहा जाता है जो मनन-चितन-मंथन करने वाले, मन का उपयोग करने वाले होते हैं और जो मन का उपयोग नहीं करते-मन है! ऐसे नहीं कि नहीं है; लेकिन मन का उपयोग नहीं करते-वे हैं जैसे जानवर। चितन नहीं चलाते कि हम जो कर्म करते जाते हैं उसका अंजाम क्या होगा? दुनियाँ कैसे चलती है? इसका रचयिता कौन है? ये कैसे वैराइटी रचना है? इन बातों में बुद्धि चलती नहीं। फिर काहे में बुद्धि चलती है? जैसे जानवर होता है, अपने तन के पोषण में ही बुद्धि जाती है, तन अर्थात देह, देहभान में ही सारी बुद्धि चली जाती, देह के पोषण में लगी रहती है; आत्मा के चितन में बुद्धि नहीं रहती।

एक होती है आत्मा और एक होती है देह। पहले देह है या पहले आत्मा है? आत्मा पहले है, देह बाद में। यह कैसे? बच्चा जब गर्भ में आता है, माँ के पेट में बच्चा आता है ना! तो पहले देह होती है कि पहले आत्मा आती है? पहले तो देह होती है। गर्भ पिण्ड निर्जीव तैयार होता है। (4-5 माह) बाद उसमें आत्मा आती है। तो यह बात तो झूठी हो गई। (किसी ने कहा- आत्मा है जो अपने संकल्पों से अपनी रचना कर रही है) हाँ, जो भी मनुष्य शरीर छोड़ता है, शरीर छोड़ने से चार महीने पहले ही उसका गर्भ माँ के पेट में तैयार होता है मतलब आत्मा के संकल्पों-विकल्पों-वायब्रेशन के आधार पर उसका गर्भ पिण्ड दूसरी माँ के पेट में तैयार होता है। अगर काना पैदा (होना) होगा, अंधा पैदा होना होगा तो उसके वायब्रेशन के आधार पर वह बच्चा अंधा पैदा होता है। कोई लूला-लँगड़ा पैदा होता है, कोई कुरूप पैदा होता है, कोई बहुत सुन्दर पैदा होता है। तो जो गर्भ पिण्ड बनता है, वह गर्भ पिण्ड पहले हुआ या पहले आत्मा हुई? आत्मा पहले। भल चार महीने पहले उस आत्मा को पुराना शरीर भी है; लेकिन वह शरीर जड़जड़ीभूत हो गया। उस शरीर के साथ, उस पाँच तत्वों के पुतले के साथ आत्मा का हिसाब-किताब पूरा होने वाला है। आत्मा वह शरीर छोड़ देती है और चार महीने के बाद उस निर्जीव गर्भ पिण्ड में प्रवेश कर जाती है।

तो आत्मा है मुख्य और जड़ शरीर है रचना। आत्मा है रचयिता। यह शरीर रूपी जो वृक्ष है, इसका बाप कौन है? इस शरीर रूपी वृक्ष को बनाने वाला कौन है? आत्मा। आत्मा है बीज। कोई कहे कि यह आम का वृक्ष खड़ा हुआ है। इसका बाप कौन है? आम का बीज। तो बीज है आत्मा और शरीर है उसकी रचना। अब आत्मा के ऊपर ज़्यादा ध्यान देना चाहिए या रचना के ऊपर ज़्यादा ध्यान देना चाहिए? (किसी ने कहा- आत्मा के ऊपर) या दोनों के ऊपर ध्यान देना चाहिए? आज की दुनियाँ किसके ऊपर ज़्यादा ध्यान देती है? (सबने कहा- रचना के ऊपर) कोई से पूछो- आप कौन हैं? तो कहेंगे- हम मास्टर हैं, डॉक्टर हैं, इंजीनियर हैं, वकील हैं, जज हैं, मिनिस्टर हैं। उनसे पूछें- आप जब पैदा हुए थे तब ये थे? तो यह जो बोला, वह देहभान में आकर बोला या अपन को आत्मा समझकर बोला? देहभान में आकर बोला। समझते हैं हम देह हैं। यह प्रिऑरिटी(प्राथमिकता) आज की दुनियाँ देह को देती है।

भगवान बाप जब इस सृष्टि को सुधारने के लिए आते हैं, कलियुग को सतयुग बनाने के लिए आते हैं, झूठ खण्ड की दुनियाँ को सच्च खण्ड की दुनिया बनाने के लिए आते हैं, तो बताते हैं- तुम देह नहीं हो। देह तो पाँच (जड़) तत्वों का पुतला है। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश और इन पाँच तत्वों से बने पुतले को चलाने वाली आत्मा चैतन्य है और वह चैतन्य आत्मा ज्योतिबिन्दु है, स्टार मिसल है। वे आसमान के स्टार्स जड़ हैं और तुम इस धरती के चैतन्य सितारे हो। तुम जो चैतन्य सितारे हो, तुम में से कोई तो सूर्य के रूप में पार्ट बजाने वाला है, कोई चन्द्रमा के रूप में पार्ट बजाने वाला है, कोई बुद्ध के रूप में पार्ट बजाने वाला है, कोई शुक्र के रूप में, कोई मंगल के रूप में, अर्थात् सप्त-ऋषियों के रूप में पार्ट बजाने वाली आत्मायें है; परन्तु तुम अपने ओरिजिनल रूप को भूल गए हो। मैं आकरके तुमको स्मृति दिलाता हूँ कि तुम किस तरह (की) पार्टधारी आत्मा हो और तुम्हारा क्या पार्ट है, जो गीता में अर्जुन से कहा- हे अर्जुन! तू अपने जन्मों को नहीं जानता, मैं तेरे को बताता हूँ।

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन ।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परन्तप ॥ 4/5

तो ऐसे नहीं है कि भगवान इस मनुष्य सृष्टि पर आकर जो भी दुनियाँ की 500-700 करोड़ मनुष्यात्माएँ हैं, उन सब मनुष्यात्माओं को, एक-2 का अनेक जन्मों का पार्ट बैठ करके बताता है। नहीं। जैसे गणित होता है, बीज गणित होता है, उसमें परिक्रिया बताई जाती है। उस परिक्रिया के आधार पर चलेंगे तो रिज़ल्ट निकल आवेगा। ऐसे ही भगवान इस सृष्टि पर आकर जो मुख्य-2 पार्टधारी हैं, जिनकी संसार में, मनुष्य सृष्टि में बड़ी शोहरत है, उनके पार्ट बता देता है। कौन-2 से मुख्य पार्टधारी हैं? दो तो मुख्य पार्टधारी हैं, जो हीरो-हीरोइन के रूप में हैं, राम और कृष्ण के रूप में हैं। इस सृष्टि रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं और बाकी 8 ऐसे हैं जो मुख्य हैं तो नहीं; लेकिन अपन को मुखिया हो करके दिखाते हैं। हैं तो पार्टधारी, ऐसे नहीं कि पार्टधारी नहीं हैं; लेकिन जो भी पार्ट बजाते हैं वह उनका नम्बरवार पार्ट है। नम्बरवार सशक्त पार्ट कहेंगे, नम्बरवार प्राचीन कहेंगे, नम्बरवार श्रेष्ठ कहेंगे और नम्बरवार निष्कृष्ट कहेंगे।

कहते हैं राम और कृष्ण तो सतयुग-त्रेता में हुए। सतयुग में दिखाते हैं नारायण का राज्य था। कीर्तन गाते हैं तो कहते हैं- "हे कृष्ण-नारायण-वासुदेव" माना कृष्ण और नारायण की आत्मा तो एक ही हो गई। त्रेता में रामराज्य दिखाते हैं और द्वापर तो है ही द्वैत फैलाने वाला युग। दो-2 मतें हो जाती हैं। जब से इस दुनियाँ में दो-2 मतें होती हैं तब से यह द्वापुर आता है। कैसा पुर? द्वापुर। हर बात में द्वैत भाव। भगवान आकरके अद्वैत दुनियाँ स्थापन करते हैं, एक ऐसी दुनियाँ बनाते हैं जहाँ सारी वसुधा ही कुटुम्ब बन जाती है। वसुधैव कुटुम्बकम्- यह भारत का पुराना नारा है। आज तो परिवार-2 सब बँट गए हैं। बाप बच्चे की नहीं मानता, बड़ा भाई छोटे भाइयों की नहीं मानता, छोटे भाई बड़े भाइयों की नहीं मानते। यह कब से हुआ? द्वापुर से हुआ। द्वापुर से जो द्वैत फैलाने वाले (धर्मपितायें) आए, उनकी हिस्ट्री दुनियाँ के सामने मौजूद है और जिसने वह अद्वैत दुनियाँ बनाई, उसकी हिस्ट्री किसी के पास नहीं है। भल शास्त्र बनाए हुए हैं, वे शास्त्र मनुष्यों के बनाए हुए हैं या भगवान ने बैठ बनाए? मनुष्यों ने बनाए हैं। मनुष्य (दाढ़ी-मूंछ वाला) विकारी बुद्धि होता है। देवताएँ निर्विकारी बुद्धि होते हैं; इसलिए देवताओं की पूजा की जाती है, अर्चना की जाती है, फूल अर्पण किए जाते हैं, मन्दिर बना कर उनके प्रति श्रद्धा-

विश्वास अर्पण किया जाता है। मनुष्य ही श्रेष्ठ काम करता है तो मनुष्य बनता है और मनुष्य भ्रष्ट काम करता है तो राक्षस बन जाता है।

मनुष्य में भगवान आते हैं, तो उसे भगवान-भगवती तुल्य बनाय देते हैं; क्योंकि भगवान स्वयं तो निराकार है। जैसे आत्माएँ निराकार हैं वैसे परमात्मा भी निराकार है। निराकार का मतलब जैसे आत्मा इन आँखों से देखी नहीं जाती, कोई ज़रूरी नहीं कि दुनियाँ की हर चीज़ इन आँखों से देखी जाती हो। अगर आँखों से देखी जाती है तो हम मानेंगे और नहीं देखी जाती है तो नहीं मानेंगे- ऐसी कोई बात नहीं होती। मलेरिया बुखार चढ़ता है, डॉक्टर खून का एक बूँद निकालता है और यंत्र से देखता है तो एक बूँद में सैकड़ों कीटाणु दिखाई पड़ते हैं। तो क्या मलेरिया के कीटाणु नहीं होते? होते हैं तब तो दिखाई देते हैं। ऐसे ही आत्मा इतना सूक्ष्म, अति सूक्ष्म कहें, तत्व है, चैतन्य तत्व, जो इन आँखों से दिखाई नहीं पड़ सकता, डॉक्टरों के स्थूल यंत्रों से देखा नहीं जा सकता; लेकिन मनुष्य जब शरीर छोड़ देता है तो उसकी आँखें देखने से पता चलता है कि इसके अंदर जो पावर थी, जो रोशनी थी आँखों की वह कहाँ चली गई? आँखें बटन जैसी क्यों हो गई? निस्तेज क्यों हो गई? वह तेज कहाँ चला गया, वह रोशनी कहाँ चली गई? पता लगता है ना! नाक, आँख, कान- दसों इन्द्रियाँ मौजूद हैं, सारा शरीर मौजूद है, फिर काम क्यों नहीं करता? क्योंकि जो आत्मा रूपी पावर थी वह चली गई।

तो जैसे आत्मा रूपी पावर को पुराने-2 मनीषियों ने भृकुटी के मध्य में बिन्दु के रूप में दिखाया है, टीका लगाने की प्रथा चलाई। यह ज्योति बिन्दु आत्मा भृकुटी के मध्य में टिकी हुई है, तो उन्होंने टीका लगाने की प्रथा चला दी कि लोगों को याद रहे कि हम देह नहीं हैं, हम तो आत्मा हैं; परन्तु यह तो मनुष्यों की युक्ति थी। कोई टीका, त्रिपुण्ड लगाने से आत्मा थोड़े ही याद आ जाएगी! आत्मा की स्मृति लाने के लिए तो प्रैक्टिस करनी पड़ती है, जो गीता में लिखा है- अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते। (6/35) यह आत्मा और आत्मा का बाप परमात्मा जो इतने सूक्ष्म हैं उनको बुद्धि कैसे ग्रहण करे? अभ्यास करके। आत्मा की स्मृति बार-2 करे और परमात्मा बाप के प्रैक्टिकल स्वरूप की स्मृति बार-2 करे। आत्मा का प्रैक्टिकल पार्ट 84 चक्र से सम्बन्धित है। मनुष्य जो 84 का चक्र लगाता है, 84 जन्मों में आता है चार युगों में, उन 84 जन्मों में आत्मा जो-2 पार्ट बजाती है, उस (चितन से) आत्मा के अनेक जन्मों का पार्ट क्लीयर हो जाता है।

आत्मा भी ज्योति बिन्दु, बिन्दु-2 आत्माओं का बाप परमपिता (शिव) भी ज्योति बिन्दु। वह ज्योति बिन्दु परमात्मा बाप इन आँखों से देखने में नहीं आवेगा। कैसे देखेंगे? "जेहिजानौ तेहि देउ जनाई" भगवान का ज्ञान भगवान के सिवाय कोई दे नहीं सकता। अरे, देवताओं की दुनियाँ का ज्ञान किसी के पास नहीं है तो भगवान का ज्ञान कैसे होगा? भगवान जब स्वयं इस सृष्टि पर आता है तो आकरके ज्ञान देता है, आत्माओं का ज्ञान देता है, आत्माओं के बाप परमपिता, स्वयं का ज्ञान देता है, सारी सृष्टि के आदि-मध्य-अंत का ज्ञान देता है। लेते कौन हैं? लेते वे हैं जो मनु की औलाद मनुष्य बनते हैं। मनु कहा जाता है ब्रह्मा को। मनन-चितन-मंथन करने वाला ब्रह्मा और उसकी जो औलाद बने वे मनुष्य कहे गए।

जिन्होंने ब्रह्मा के मुख से निकली हुई आवाज़ को सुना और सुन करके जीवन में धारण किया, प्रैक्टिकल जीवन को परिवर्तित किया, वे मनुष्य बने और मनुष्यों में उत्तम होते हैं ब्राह्मण। ब्राह्मण भी 9 कुरी के गाए हुए हैं।

ये 9 कुरियाँ एक से एक ऊँची कुरियाँ गाई हुई हैं। 9 कुरी के ब्राह्मण, 9 ऋषियों से उनकी उत्पत्ति शुरू हुई। ऋषि-मुनि, जिन्होंने भगवान के आने पर पवित्रता को धारण किया, अपवित्र देह के संग का (बुद्धि से) त्याग किया, अपवित्र संकल्पों का त्याग किया, अपवित्र वायब्रेशन का त्याग किया, अपवित्र कर्म का त्याग किया, अपवित्र वाचा का त्याग किया। उन 9 श्रेष्ठ ऋषियों की औलाद 9 प्रकार के ब्राह्मण गाए हुए हैं। उन 9 ब्राह्मणों में ब्रह्मत्व की पावर नम्बरवार होती है, जिनसे ये दुनियाँ के 9 धर्म स्थापन हुए, जो भगवान से राजयोग सीख करके नम्बरवार राजाई प्राप्त करते हैं। वे 9 धर्म हैं- सतयुग का सूर्यवंश, 16 कला सम्पूर्ण कृष्ण को गाया हुआ है, नारायण को 16 कला सम्पूर्ण कहा जाता है; राम को 14 कला कहा जाता है, चन्द्रवंश और फिर (द्वापुर से) द्वैतवादी धर्म शुरू होते हैं। द्वैतवादी धर्मों की हिस्ट्री मिल रही है मनुष्यों के पास। क्यों? देवताओं की हिस्ट्री क्यों नहीं मिल रही है?

देवताओं की हिस्ट्री इसलिए नहीं मिल रही है कि आज से 2500 साल पहले महाभारी विनाश हुआ था; लेकिन वह अर्ध विनाश हुआ था। उस सृष्टि के आधे विनाश में, जो भारत अविनाशी खण्ड है, उस अविनाशी खण्ड में भगवान की बनाई हुई नई दुनियाँ का लोप हो गया, देवताई धर्म का लोप हो गया, देवताई बुद्धि क्षीण हो गई। इसके लिए क्रिश्चियन्स के ग्रन्थों में और मुसलमानों के ग्रन्थों में एक कथा आती है, आदम और हौवा की, एडम और ईव की (कथा) कि भगवान ने उनसे कहा कि तुम जन्नत में जाओ; लेकिन एक बात का ध्यान रखना, उस जन्नत में जो बॉडी (के बीच) का फल है, गन्दुम मत खाना। मुसलमान लोग गन्दुम गेहूँ को समझते हैं। गेहूँ का आकार मनुष्यों में जो स्त्री के अंग हैं उनसे मिलता-जुलता है। उस तरफ इशारा दिया कि यह देह का सुख नहीं भोगना। यह (मूतपलीती) गन्दा सुख है। इसके सुख भोगने से तन भी क्षीण होता है, मन भी क्षीण होता है और तन और मन क्षीण होने से रिज़ल्ट क्या आता है? मनुष्य धनहीन हो जाता है। मन-बुद्धि सालिम रहे, तन सालिम रहे, तो धन स्वतः ही आता रहता। तन भी क्षीण हुआ, मन भी क्षीण हुआ और धन भी क्षीण हुआ, तो दुर्गति को पाते रहोगे।

सतयुग-त्रेता में, राम-कृष्ण की दुनियाँ में प्रकृति/कुदरत सब प्रकार के सुख मुहैया कराती थी, मनुष्यों को कोई काम करने की दरकार नहीं होती थी और आज की दुनियाँ में एक मनुष्य तो क्या, पूरा परिवार कमाता है, तो भी पूर्ति नहीं होती। एक होती है सात्विक प्रकृति, सतोप्रधान कुदरत और आज की दुनियाँ में है तमोप्रधान कुदरत, तामसी प्रकृति। यह तामसी प्रकृति कैसे बनती है? प्रकृति मतलब (मानवीय) स्वभाव-संस्कार। मनुष्यों की प्रकृति जब तामसी बनती है तो संघात रूप में जो जड़ प्रकृति अथवा कुदरत है वह भी तामसी बन जाती है। मनुष्यों की बुद्धि जब सात्विक बनती है तो सतयुग में प्रकृति भी सात्विक बन जाती है और सब प्रकार के सुख मुहैया कराती है। तो यह मनुष्य की मन-बुद्धि रूपी प्रकृति कैसे सात्विक बनी? स्व चितन से बनी। स्व माना आत्मा, आत्मिक चितन में जितना हम रहेंगे उतना हमारी प्रकृति, हमारे स्वभाव-संस्कार स्वतः ही सात्विक बन जावेंगे और हमारा वायब्रेशन सात्विक होने से अगला जन्म जो हमें मिलेगा वह सात्विक परिवार में मिलेगा, सात्विक वातावरण में हमारा जन्म होगा। आज जन्म हो रहे हैं गन्दे नालों के किनारे। मक्खी-मच्छरों की तरह जन्म हो रहे हैं। सतयुग में जो जन्म होगा वह सात्विक परिवार में, यथा राजा तथा प्रजा सब सुखी होंगे, ऐसा जन्म होगा। ऐसा जन्म देने के लिए भगवान अभी पढ़ाई पढ़ाय रहा है। पढ़ाई का नाम है सहज राजयोग। यह सहज राजयोग कोई मनुष्य मात्र

नहीं सिखाय सकता। (भगवान) सहज राजयोग से सारी दुनियाँ का परिवर्तन करता है। मनुष्य मात्र का परिवर्तन करके जाता है। जब (द्वापुर) से द्वैतवादी दुनियाँ की शुरुआत हुई तब से दुनियाँ और प्रकृति, नेचर, कुदरत- यह नीचे गिरती चली आई है।

अभी 150-200 साल से माया का पॉम्प एण्ड शो इतना बढ़ गया कि मनुष्य की बुद्धि (मानव-कृत) साइन्स से चमत्कृत हो गई; क्योंकि साइन्स-विज्ञान (विकारी) मनुष्य की पैदाइश है, मनुष्य की रचना है; लेकिन इस साइन्स से भी बड़ी चीज़ है सायलेन्स, जो भगवान बाप आकरके स्थापन करते हैं। एक तरफ साइन्स और एक तरफ सायलेन्स। आज से 5000 साल पहले भी यह महाभारी महाभारत गृह युद्ध हुआ था और यह लड़ाई चली थी- साइन्सदाँनों की लड़ाई और सायलेन्स धारण करने वालों की लड़ाई। जिन्होंने भगवान की सिखाई हुई सायलेन्स को धारण किया वे पाण्डव कहे गए और जिन्होंने (महाविकारी) साइन्सदान का पक्ष लिया, बुद्धि के चमत्कार को सत्कार दिया, वे कौरव और यादव कहे गए। दूसरे शब्दों में, राम और रावण सम्प्रदाय कहे गए। साइन्स और शास्त्र अनेक मनुष्यों की रचना है। ये व्यभिचार की पैदाइश है। व्यभिचार वेश्यालय में होता है या शिवालय में होता है? जहाँ व्यभिचार होता है उसे कहते हैं वेश्यालय और जहाँ राम का राज्य होता है, यथा राजाराम तथा प्रजा अव्यभिचारी होती है। तो साइन्स है अनेकों बुद्धियों की पैदाइश, शास्त्र भी हैं अनेकों बुद्धियों की पैदाइश। एक मनुष्य ने शास्त्र नहीं लिखे। उन शास्त्रों के आधार पर जो चल रहे हैं या उन साइन्सदाँनों के आधार पर जो चल रहे हैं, वे सब हो गए रावण सम्प्रदाय। उनकी बुद्धि चमत्कृत हुई पड़ी है, प्रभावित हुई पड़ी है। भगवान से प्रभावित नहीं है; क्योंकि भगवान है एक और शैतान हैं अनेक।

शैतान रावण को कहा जाता है। रावण उसे कहा जाता है जो रुलाता है, बात-2 में दुःख पैदा करता है। भगवान उसे कहा जाता है, आखरीन जब दुनियाँ का अंत होगा तो सब मनुष्यात्माओं की बुद्धि उस भगवान के पीछे भागेगी; क्योंकि वह गॉड इज़ ट्रूथ संसार में प्रत्यक्ष हो जाएगा। (उस) एक के पीछे जब बुद्धि भागेगी तो वह स्वतः ही भगवान साबित हो जावेगा। भगवान की बायोग्राफी भक्तिमार्ग में भागवत के रूप में गाई हुई है। सारी दुनियाँ उसके पीछे भागेगी। ऐसे नहीं कि राम और कृष्ण के फॉलोअर्स ही भागेंगे। नहीं। इब्राहीम के फॉलोअर्स चाहे इस्लामी हों, क्राइस्ट के फॉलोअर्स चाहे क्रिश्चियन्स हों, बुद्ध के फॉलोअर्स बौद्ध हों, गुरुनानक के फॉलोअर्स सिक्ख हों और शंकराचार्य के फॉलोअर्स संन्यासी हों, महर्षि दयानन्द के फॉलोअर्स आर्यसमाजी हों अथवा लेनिन-स्टालिन की औलाद, जिन्होंने अपने देश में राजाओं को कत्लेआम कर दिया, राजाई नाम से ही उनको नफरत थी, जब दुनियाँ का लगातार ऐटम बम्बों से विनाश होगा तो वे भी सर झुका जावेंगे, "ओ गॉड फादर!" चिल्लावेंगे। उनको भी अंत समय में मानना पड़ेगा कि मनुष्यकृत साइन्स कुछ भी नहीं है और भगवान जो सायलेन्स की दुनियाँ स्थापन करता है वही सब कुछ है।

भगवान आकर इस दुनियाँ में सहज राजयोग के द्वारा राजाओं की दुनियाँ स्थापन करता है। हिस्ट्री में, दुनियाँ के देश-देशान्तर में जो छोटे-बड़े राजाएँ हुए हैं, उन राजाओं को राजाई की पढ़ाई किसने पढ़ाई? कब पढ़ाई? कोई ने तो पढ़ाई होगी! यह कन्ट्रोलिग पावर उनमें कहाँ से आई? कोई तो टाइम रहा होगा, जब उन राजाओं ने यह कन्ट्रोलिग पावर धारण की! यह है कलियुग के अंत का समय और सतयुग के आदि का टाइम,

जिसे संगमयुग कहते हैं। जो भी 500-700 करोड़ मात्र पुरुष हैं, उन पुरुषों में उत्तम-2 पार्टधारी कौन हैं, वे सब संसार में प्रत्यक्ष होने वाले हैं। जिन उत्तम पार्टधारियों की यादगार में हर धर्म में आज माला रूपी संगठन प्रसिद्ध है। हर धर्म के मनुष्य-फॉलोअर्स माला घुमाते हैं, माला के मणके जपते हैं, स्मरण करते हैं; परन्तु जानते नहीं हैं कि ये गोल-2 मणके उन (उन अणु रुप) आत्माओं की यादगार है, जिन आत्माओं को ऐसा जपने योग्य, स्मरण करने योग्य भगवान ने आकरके बनाया था। वे माला के मणके अभी संसार में गुप्त रूप में पाण्डवों की तरह राजयोग सीख रहे हैं। यह राजयोग सीखने के लिए कोई झाँझ, मृदंग, मँजीरा बजाने की दरकार नहीं है। यह कोई देह का योग नहीं है कि आसन-प्राणायाम लगाना पड़े। ये आसन-प्राणायाम देह की परिक्रियाएँ हैं, देहभान बढ़ाने केलिए।

राजयोग तो आत्मा का पुरुषार्थ है। आत्मा मन-बुद्धि (की शक्ति) को कहा जाता है। मनुष्य मर जाता है तो मन-बुद्धि रूपी आत्मा की शक्ति निकल गई। ऐसे नहीं कहते कि उसमें अभी मन-बुद्धि रह गई। क्या चीज़ निकल गई? मनन-चितन करने की पावर चली गई, फैसला करने की शक्ति निकल गई और उस मन-बुद्धि में जो अनेक जन्मों के अच्छे और बुरे संस्कार भरे हुए हैं, वे मन-बुद्धि के साथ ही चले गए। ये मन-बुद्धि रूपी आत्मा ज्योति बिन्दु के रूप में ऐसा छोटा-सा रिकॉर्ड है, छोटा-सा टेप है, जिसमें 84 जन्मों का भी पार्ट भरा हुआ है। यह आत्मा कितनी जबरदस्त कुदरत है। इसकी हिस्ट्री भगवान बाप आकर बताता है। अपनी आत्मा के 84 के चक्र को जानने के लिए और परमात्मा बाप की बायोग्राफी को जानने के लिए, इस एक संगमयुग के जन्म में ही मनुष्य मात्र को मौका मिलना है, मिलता है और मिल रहा है। इसके अलावा और कोई जन्म नहीं होगा, जहाँ मनुष्यात्माएँ अनेक जन्मों की राजाई प्राप्त कर सके। यह जन्म-जन्मान्तर की राजाई भगवान आकरके देते हैं; लेकिन जो (ईश्वरीय) पढ़ेंगे वे प्राप्त करेंगे। मनुष्य पढ़ाई पढ़ाते हैं तो एक जन्म के लिए डॉक्टर बनावेंगे, इंजीनियर बनावेंगे, वकील बनावेंगे, जज बनावेंगे और वह भी कोई ज़रूरी नहीं कि पढ़ाई पढ़ने के बाद डॉक्टर, जज या इंजीनियर बन ही जावे और भगवान बाप तो गारण्टी देते हैं कि मैं जो पढ़ाई आकरके पढ़ाता हूँ, अगर तुम रेगुलर पढ़ेंगे तो गारण्टी से राज परिवार के मणके बनेंगे, राज परिवार के भाँती बन जावेंगे। ये जन्म-जन्मान्तर का राज परिवार भगवान आकरके बनाता है। यह राज परिवार 16,108 आत्माओं का राज परिवार है। पढ़ने वाले लाखों की तादाद में होंगे। सारी दुनियाँ भगवान की यह पढ़ाई पढ़ेगी; लेकिन नम्बरवार ऊँच पद पाने वाले सिर्फ 16,108 बनेंगे, जो (नं.वार) जन्म-जन्मान्तर राज घराने में जन्म लेते रहेंगे, प्रिन्स-प्रिन्सेज बनते रहेंगे, राजाई प्राप्त करते रहेंगे, राजा-रानी, महाराजा-महारानी बनते रहेंगे। अच्छी पढ़ाई पढ़ेंगे तो अच्छा पद पावेंगे, भगवान की पढ़ाई पढ़ते-2 शैतान के चक्कर में आते रहेंगे तो कोई-2 जन्म में दास-दासी भी बन सकते हैं, चाण्डाल भी बन सकते हैं। राज परिवार के चाण्डाल अलग होते हैं, दास-दासी अलग होते हैं और प्रजा घराने में साहुकारों के दास-दासी अलग होते हैं, उनके चाण्डाल भी अलग होते हैं।

यह सारा हिसाब-किताब जन्म-जन्मान्तर का अभी तैयार हो रहा है। भगवान इस सृष्टि पर बार-2 नहीं आता। जैसे कुम्हार है, एक बार डण्डा चकले में लगाता है और चकला चालू हो जाता है, ऐसे ही यह सृष्टि रूपी चकला है। यह सृष्टि रूपी चकला, भगवान बाप आकरके एक बार कलियुग-अंत में ज्ञान का दण्ड घुमाता है और यह सृष्टि 5000 वर्ष तक ज्यों की त्यों (कालक्रमानुसार) चलती रहती है। जब वह पावर धीमी होती है तो जो

जानवरियत के अवतार हैं, संसार में (हिसा की) जानवरियत फैलाने वाले हैं, वे द्वैतवाद फैला देते हैं। दो-2 धर्म शुरू हो जाते हैं, दो धर्मों से चार धर्म शुरू हो जाते हैं, चार से आठ मतें (और राज्य) शुरू हो जाती हैं और सब आपस में लड़ते-झगड़ते हैं। द्वापर से कलियुग बन जाता है। कलियुग को कहा जाता है कलह-क्लेश की दुनियाँ। यह कलह-क्लेश कब पैदा होता है? जब मतों में व्यभिचार पैदा होता है। अनेक मतोंवाला रावण राज्य चलता है। आज से 200-300 साल पहले दुनियाँ के देश-देशान्तर में राजाओं का (ही) राज्य था या प्रजा तन्त्र राज्य था? (सबने कहा- राजाओं का राज्य था।) अभी अंत में आकरके माया-रावण इतना प्रबल हो जाता है, दस शीश वाला रावण इतनी प्रबलता धारण करता है कि आज दुनियाँ के सभी देशों में प्रजातन्त्र लागू हो गया। नेपाल में अभी तक राजा का राज्य था। अब वहाँ भी प्रजातन्त्र राज्य लागू हो गया। भगवान कहते हैं- यह प्रजा के ऊपर प्रजा का राज्य, बेकायदे राज्य है। (मु. 4.2.67 पृ.1 मध्य)

इस राज्य में कोई धनी-धोरी नहीं। "तुण्डे-2 मतिर्भिन्ना", जिसको जो मन में आता है सो ही कानून बनाते रहते हैं। अभी भगवान बाप इस सृष्टि पर आते हैं तो गुप्त में राजाई स्थापन करते हैं। यह गुप्त पाण्डवों की गुप्त गवर्मेण्ट है, जो थोड़े ही वर्षों में संसार में प्रख्यात होने वाली है। जो अनेकानेक मानवीय धर्म हैं और उनके फॉलोअर्स हैं, उनमें से जो श्रेष्ठ-2 आत्माएँ हैं; क्योंकि हर धर्म में श्रेष्ठता भी होती है, हर धर्म के फॉलोअर्स में अच्छे से अच्छे भी होते हैं और बुरे से बुरे भी होते हैं, तो हर धर्म में से श्रेष्ठ-2 आत्माओं को भगवान बाप चुन रहा है। वह चुनाव पूरा होने के बाद कार्य पूरा हो जावेगा, माला तैयार हो जावेगी, पढ़ाई पूरी हो जावेगी और नंबर्स डिक्लेयर होना शुरू हो जावेंगे। जैसे वह पढ़ाइयाँ होती हैं तो उसमें स्कॉलरशिप पाने वाले बहुत थोड़े होते हैं, फिर फर्स्ट क्लास पाने वालों की संख्या उससे ज़्यादा होती है, फिर सेकेण्ड डिवीज़न आने वालों की संख्या और ज़्यादा होती है और थर्ड क्लास पास होने वालों की संख्या बहुत (ही) ज़्यादा होती है, ऐसे ही जो ईश्वरीय पढ़ाई है, उस पढ़ाई में जो स्कॉलरशिप पाने वाले हैं, वे आठ फरिश्ते हैं, जो हर धर्म में गाए हुए हैं। हिन्दुओं में नवग्रहों के रूप में उनका पूजन होता है, दक्षिण भारत में अष्टदेवों के रूप में उनके मन्दिर बनते हैं, पूजन होता है। मुसलमानों के कुरान में भी लिखा हुआ है कि जब कयामत होती है तो खुदा के तख्त को आठ फरिश्ते उठाते हैं। वह स्कॉलरशिप पाने वालों का रिज़ल्ट आना भी शुरू हो गया और दुनियाँ के लोग रावण के भाई की तरह कुम्भकर्ण की निद्रा में सोए हुए हैं। ओमशान्ति।

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

–––

01.01.2025